इकाई 10 प्लेटो का काव्य चिंतन

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य
10.1 प्रस्तावना
10.2 युग परिचय
10.3 प्लेटो का व्यक्तित्व
10.4 काव्य प्रेरणा और काव्य सत्य
10.5 काव्य सत्य और अनुकरण
10.6 प्रत्ययवाद से तात्पर्य
10.7 समाहार
10.8 शब्दावली
10.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें
10.10 अभ्यास के लिए प्रश्न

10.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- बता सकेंगे कि पश्चिम में साहित्य चिंतन का आरंभ कब हुआ और उसमें सबसे महत्वपूर्ण चिंतन किन आचार्यों का है,
- प्लेटो के समय और उनके व्यक्तित्व के विषय में जानकारी दे सकेंगे,
- प्लेटो के काव्य प्रेरणा और काव्य सत्य संबंधी विचारों का परिचय दे सकेंगे,
- उनके अनुकरण संबंधी सिद्धांत की चर्चा कर सकेंगे,
- प्लेटो द्वारा प्रतिपादित काव्य प्रभाव का विवेचन कर सकेंगे,
- बता सकेंगे कि प्लेटो के काव्य सिद्धांत ने परवर्ती साहित्य चिंतन को किस प्रकार प्रभावित किया।

10.1 प्रस्तावना

इस पाठ्यक्रम की पिछली इकाइयों में आप भारतीय काव्यशास्त्र का परिचय प्राप्त कर चुके हैं। साहित्य के स्वरूप, उद्देश्य, साहित्य चिंतन के विभिन्न सम्प्रदायों के विषय में जानकारी पाने के अतिरिक्त आपने शब्द शक्तियों के विषय में पढ़ा है। प्रस्तुत खंड में हम पश्चिमी साहित्य सिद्धांतों का परिचय प्राप्त करेंगे।

पश्चिम में साहित्य-शास्त्र के विकास के संकेत पाँचवीं शती ईसा पूर्व के पहले से ही मिलने लगते हैं। हैसिओड, सोलन, पिंडार आदि की रचनाओं में काव्य, काव्य के हेतु तथा काव्य प्रयोजन संबंधी मान्यताओं का उल्लेख मिलता है। प्रसिद्ध नाटककार अरिस्तोफिनीस के नाटकों में भी हास्य-व्यंग्य के माध्यम से साहित्य के सिद्धांतों का उल्लेख हुआ है। किंतु एक सुसम्बद्ध शास्त्र के रूप में साहित्यालोचन के दर्शन हमें सबसे पहले प्लेटो में ही मिलते हैं। प्लेटो मूलतः आत्मवादी चिंतक हैं; उन्होंने कविता पर एक दार्शनिक की दृष्टि से विचार किया है। प्लेटो के शिष्य अरस्तू ने कविता पर अधिक वैज्ञानिक और व्यवस्थित दृष्टि से विचार किया। गुरु और शिष्य की मूल दृष्टि का अंतर उनके काव्य सिद्धांतों में दो जीवन-दृष्टियों का अंतर बनकर सामने आता है। प्लेटो जहाँ अनुकरण को यथार्थ से दूर और यथार्थ को विकृत करने वाला मानते हैं, वहीं अरस्तू उसे यथार्थ से बढ़कर मानते हैं। अरस्तू के विवेचन के लगभग दो शताब्दियों तक साहित्य सिद्धांतों की विशेष चर्चा उपलब्ध नहीं है। उनके बाद रोमन कवि हॉरेस (65-68 ई.पू.) की 'आर्स पोइटिका' (Ars Poetica) का साहित्य सिद्धांत के रूप में उल्लेख मिलता है। उनका भाषा संबंधी सिद्धांत काव्यालोचन के क्षेत्र में उनकी एक विशेष देन है। ईसा की पहली शताब्दी में यूनानी चिंतक लौंगिनुस/लांजाइनस की कृति 'पेरीइप्सुस' में काव्य के संदर्भ में उदात्त को बहुत अधिक महत्व दिया गया। ईसा की तीसरी शताब्दी तक आते-आते आत्मवाद तथा वस्तुवाद क्रमशः नव्य-प्लेटोवाद और नव्य-अभिजात्यवाद के रूप में सामने आने लगा। इस समय प्लॉटिनस ने गहन दर्शन पर आधारित सिद्धांतों का प्रतिपादन किया। नव्य-प्लेटोवाद का प्रभाव मध्ययुगीन धार्मिक चिंतन पर पड़ा।

10.2 युग परिचय

पश्चिम में सुसम्बद्ध शास्त्र के रूप में साहित्यालोचन के दर्शन सबसे पहले प्लेटो (427-347 ई.पू.) में होते हैं। उनका आविर्भाव ऐसे समय में हुआ था जिसे एथेन्स (यूनान) का पतनकाल कहा जाता है। युद्ध में पराजित एथेन्स अनेक कठिनाइयों से गुज़रते हुए शक्तिहीन हो चुका था। चारों ओर आध्यात्मिक मूल्यों का विनाश और सर्वत्र अवसरवादिता, विश्वासघात का माहौल था। ज्यादातर लोगों की संख्या ऐसी थी जो दास थे और जिनकी पीड़ाएँ अकथनीय थीं। इन श्रमजीवी दासों के बल पर ही ऐथेन्स की सभ्यता और संस्कृति का निर्माण हुआ था। किंतु ये लोग नागरिक जीवन में अधिकार पाने से वंचित थे। प्रजातंत्र के नाम पर राज्यसत्ता व्यापारियों और कुछेक कुलीनों के कब्ज़े में थी। इसलिए अधिकांश विद्वानों का यह मत है कि प्लेटो का आदर्शवाद समकालीन सामाजिक पतन की गहरी प्रतिक्रिया का परिणाम है।

प्लेटो की मूल दृष्टि आत्मवादी (Subjective) या 'प्रत्ययवादी' (Idealist) थी अर्थात् उनके मत से यह विश्व और इसके सकल पदार्थ विश्व की विराट चेतना में प्रत्यय के रूप में स्थित हैं। बाहरी संसार में हम जो कुछ देखते हैं वह उस अमूर्त प्रत्यय का मूर्त अनुकरण मात्र है। कविता बाह्य संसार से सामग्री ग्रहण करती है और इस सामग्री को ही संशोधित-सपांदित कर संयोजित करती है। अतः वह अनुकरण का अनुकरण होने के कारण सामान्यतः ग्रहणीय नहीं है। प्लेटो के मत से कविता में वैज्ञानिकता, तर्कसिद्धता और गहरी मानवीय सामाजिकता का अभाव होता है।

10.3 प्लेटो का व्यक्तित्व

प्लेटो का जन्म एक कुलीन वंश में हुआ था। उन्हें माता-पिता ने 'अरिस्तोक्लीस' नाम दिया था। किंतु उनके शरीर के आकार-प्रकार को देखकर मल्ल गुरु ने उन्हें 'प्लातोन' नाम दिया। प्लातोन का अर्थ है - चौड़ा-चकड़ा। अरबी-फारसी परंपरा में यही नाम 'अफलातून' के रूप में प्रसिद्ध हुआ। लेकिन विश्व की अनेक भाषाओं में उन्हें प्लेटो नाम से ही जाना जाता है। प्लेटो के दुर्भाग्य की भी एक कहानी है। बचपन में ही पिता की मृत्यु हो गई और माता ने दूसरा विवाह कर लिया। उनका बचपन एक ऐसे पारिवारिक परिवेश में बीता जिसके सदस्य लंबे समय से ऐथेन्स की राजनीति में सक्रिय भाग लेते चले आ रहे थे। प्लेटो ने स्वयं प्रत्यक्ष राजनीति में भाग नहीं लिया किंतु यह सच बात है कि उनके संस्कारों और विचारों में राजनीति रमी हुई थी। युवा प्लेटो, जिनकी उम्र बीस वर्ष रही होगी, महान दार्शनिक सुकरात के संपर्क में आए। उनकी पूरी शिक्षा-दीक्षा सुकरात की छत्रछाया में हुई। इतना ही नहीं, वे सुकरात के मृत्यु-क्षण तक उनके साथ रहे। 28 वर्ष की अवस्था से लगभग 12 वर्ष तक प्लेटो देश-देशांतर में भ्रमण करते हुए विभिन्न मत-मतांतरों का अध्ययन करते रहे और वैचारिक रूप से परिपक्व होकर ऐथेन्स लौटे। प्रौढ़ प्लेटो ने लौटकर उस प्रसिद्ध अकादेमी की स्थापना की जिसे यूरोप का सर्वप्रथम विश्वविद्यालय कहलाने का श्रेय प्राप्त है। प्लेटो से संबंधित तथ्य यह बात भी सामने लाते हैं कि किशोर और युवा प्लेटो की रुचि काव्य रचना में थी। किंतु सुकरात के संपर्क में आने पर अपनी काव्य रचनाएँ उन्होंने नष्ट कर दीं और रचनाकर्म समाप्त। आज भी उनकी काव्य-रचना के कुछ अंश 'ऑक्सफोर्ड बुक ऑफ ग्रीक वर्स' में संकलित हैं।

प्लेटो का चिंतन संवादों में मुखरित हुआ है। यह विश्वास किया जाता है कि अकादेमी की स्थापना के पूर्व वे अनेक 'संवादों' (Dialogues) की रचना कर चुके थे। अकादेमी की स्थापना के बीस वर्ष तक उन्होंने कोई 'संवाद' नहीं लिखा। लेकिन अंतिम वर्षों में फिर से संवादों की ओर प्रवृत्त हुए। उनका अंतिम संवाद 'लॉज' नाम से प्रसिद्ध है। प्लेटो के कुछ संवाद 'पोलितेइया', 'रिपब्लिक', तथा 'ईऑन' में संकलित हैं। कुल मिलाकर विद्वान प्लेटो की 28 रचनाओं को प्रामाणिक कृतित्व के रूप में स्वीकार करते हैं जिनमें 27 संवाद और ग्यारह पत्रों का एक संग्रह शामिल है। यह बात भूलने की नहीं है कि प्लेटो ने काव्य और कला के संबंध में किसी स्वतंत्र ग्रंथ की रचना नहीं की है, संवादों में प्रसंगवश काव्य या कला की चर्चा आती रहती है। ऐसे संवादों में 'ईऑन', 'फैड्रस', 'सिम्पोसिऑन' आदि का नाम लिया जा सकता है। प्लेटो के संवादों की प्रमुख विशेषता है - द्वंद्वात्मक पद्धति। संवादों के प्रमुख नाटकीय पात्र सुकरात के कथन में जगह-जगह पूर्वापर असंगतियाँ और अंतविरोध मिलते हैं। प्रायः पाठक यह निश्चित नहीं कर पाता कि मूल विषय पर स्वयं प्लेटो के विचार क्या हैं। इन कठिनाइयों के बावजूद इस द्वंद्वात्मक पद्धति की अपनी विशेषताएँ हैं जिनके प्रति विद्वानों का अपना आकर्षण रहा है। काव्य और कला के विषय में प्लेटो की बुनियादी चिंता है - 'रिपब्लिक' या आदर्श गणराज्य में उनकी उपयोगिता। इस उपयोगिता का निर्णय करने के लिए ही प्लेटो ने काव्य की प्रेरणा, काव्य का स्वरूप,

काव्य के विषय, काव्य के रूप, काव्य और सत्य का संबंध, काव्य और सौंदर्य, काव्य और लोकमंगल, कला की परिभाषा, कलाओं में काव्य का स्थान, जीवन और कविता आदि अनेक विषयों पर चर्चा की है। प्लेटो के इन विचारों की व्यापकता को देखते हुए इनमें एक व्यापक और व्यवस्थित काव्य सिद्धांत के पुनर्निर्माण की संभावनाओं का संकेत मिलता है, भले ही प्लेटो के संवादों में किसी निश्चित क्रम का निर्वाह न किया गया हो।

10.4 काव्य प्रेरणा और काव्य सत्य

प्लेटो ने काव्य और कला को दैवी प्रेरणा का परिणाम माना है। उन्होंने अपने संवादों में अनेक स्थानों पर कवि के 'दिव्य पागलपन' (Divine Insanity) की चर्चा की है। उनका यह भी विश्वास है कि सृजन के क्षणों में परमात्मा कवियों से उनका मस्तिष्क छीन लेता है। विद्या की देवी सरस्वती (Muse) कवि के भीतर एक ऐसी कल्पना-शक्ति जाग्रत करती है कि वह भावावेग की प्रेरणा के बिना रह नहीं सकता। प्लेटो ने प्रसिद्ध प्राचीन ग्रीक कवि होमर की कृतियों - 'इलियड' और 'ओडसी' - पर विचार करते हुए भी यह मत व्यक्त किया है कि उनकी कविताओं और चरित्रों में भावावेग और कल्पनातिरेक है। उन्होंने यहाँ तक कहा है कि दुनिया-भर के लोगों को झूठ बोलना होमर ने ही सिखाया है। प्रेरणा दिव्य-शक्ति के रूप में कवि को संचालित करती है और एक अमिट श्रृंखला बनाती है।

प्लेटो द्वारा कविता की दिव्य-प्रेरणा की चर्चा एक प्रकार से काव्य की सृजन प्रक्रिया के संबंध में प्लेटो के विचार हैं जो 'ईऑन' नामक संवाद में मिलते हैं। काव्य सृजन प्रक्रिया के संबंध में प्लेटो की यह मान्यता है कि सभी समर्थ कवि अपनी रचना किसी सचेष्ट-कलात्मक प्रेरणा द्वारा नहीं बल्कि दैवीय शक्तियों से प्रेरित एवं अभिभूत होकर करते हैं। अर्थात् कवि कर्म किसी वैज्ञानिक तर्क-पद्धति पर आधारित नहीं है। कवि में सृजन की क्षमता का उदय दैवी शक्ति की प्रेरणा (Divine Inspiration) के रूप में होता है। अपने इस विश्वास को सिद्ध करने के लिए प्लेटो ने यह तर्क दिया कि काव्य-सृजन के क्षणों में रचनाकार किन्हीं कलात्मक नियमों के आधार पर रचना में प्रवृत्त नहीं होता। वह तो दिव्य शक्ति के वशीभूत होकर काव्य-रचना में प्रवृत्त होता है। इसलिए प्लेटो कवि के 'दिव्य पागलपन' (Divine Frenzy) की चर्चा बार-बार करते हैं। उनके अनुसार यह किसी प्रकार की मानसिक विकृति या मनोग्रंथि का परिणाम न होकर दिव्य प्रेरणा से अभिभूत मानव की सहज आत्म-विस्मृति का सुपरिणाम है। निष्कर्ष यह कि काव्य का सृजन ऐसी मनःस्थिति में होता है जब कवि अपनी सहज विवेक वयस्कता को खोकर किन्हीं दैवी शक्तियों के अधीन हो जाता है। इतना ही नहीं, वह एक आरोपित व्यक्तित्व धारण कर लेता है। प्लेटो का विचार है कि -

> **इस अवस्था में वह केवल एक यंत्र एक माध्यम मात्र रह जाता है। इस मनःस्थिति में उच्चरित अमूल्य वाणी का वक्ता स्वयं कवि नहीं होता वह दैवीय उक्तियों का माध्यम मात्र होता है। समस्त सुंदरतम कविता का आविष्कार मूलतः काव्य देवियों द्वारा होता है। अलौकिक शक्ति द्वारा अधिकृत कवि स्रष्टा नहीं, उनका प्रवक्ता मात्र होता है। सृजन क्षण को प्लेटो सचेष्ट प्रयत्न न मानकर अनायास घटित घटना मानते हैं। उनके मतानुसार दैवीय अनुकम्पा के बिना कोई कवि कवि नहीं हो सकता। काव्य सृजन प्रक्रिया को प्लेटो ने एक सुनिश्चित कलात्मक प्रयास नहीं माना। कविता उनके लिए शिल्प नहीं। (पाश्चात्य साहित्य चिंतन, निर्मला जैन, कुसुम बाँठिया, पृ.38)**

इस प्रकार, प्लेटो ने कवि को कविता का निमित्त कारण मानकर उसे सभी दायित्वों से मुक्त कर दिया। कवि, कविता के प्रति इस हद तक समर्पित हो जाता है कि कवि कविता की रचना नहीं करता, वह स्वयं रच जाती है। उसका रचनाकार तो ईश्वर ही है। प्लेटो के इस काव्य-सृजन-सिद्धांत का काफी समय बाद रोमांटिक कवियों ने समर्थन किया। शायद प्लेटो से पहले भी यह धारणा चली आ रही थी कि काव्य दैवी प्रेरणा का परिणाम है। इसका प्रमाण यह है कि होमर ने अपनी काव्य रचना का आरंभ काव्य देवियों की स्तुति के साथ किया है। प्लेटो ने 'फैड्रस' में काव्य-विक्षेप (दिव्य पागलपन) के चार प्रकारों की चर्चा की है जिसमें कवि को पैगम्बर, धर्मगुरु और प्रेमी का समवर्गी सिद्ध किया गया है। 'ईऑन' प्लेटो के इन्हीं विचारों का विस्तार करता है।

विद्वानों का मानना है कि अनेक परिवर्तनों से गुज़रने पर भी प्लेटो का यह सिद्धांत आज भी जीवित है। जीवित होने का प्रमाण यह है कि इस सिद्धांत की अनुगूँज शेक्सपियर और ड्राइडन तक में सुनाई देती है। यह दूसरी बात है कि प्लेटो ने 'रिपब्लिक' के दसवें अध्याय में जिस रूप में काव्य की चर्चा की है वह 'ईओन' की काव्य चर्चा से काफी भिन्न है। 'ईऑन' में तो प्लेटो कविता की दैवीय प्रेरणापरक

व्याख्या करते हुए कवि को एकदम झूठा असत्य-भाषी तक कह देते हैं। मूल बात यह है कि अपने काव्य चिंतन में प्लेटो नैतिक मूल्यों की ओर बढ़ते चले गए और उन्होंने कवि की नैतिक जिम्मेदारी के प्रश्न पर ही गंभीरता से विचार किया। रिपब्लिक के विचारों में कवि के नैतिक दायित्व की चिंता प्रधान रूप से व्याप्त है। विद्वान कहते हैं कि यह कवि और दार्शनिक के बीच द्वंद्वात्मक संबंध विषयक चिंता का परिणाम है।

प्लेटो के संपूर्ण चिंतन का आधार है - नैतिकता और आदर्श राज्य का निर्माण। उनके कला संबंधी सभी विचार आदर्श नागरिक के निर्माण की चिंता के संदर्भ को ही व्यक्त करते हैं। ललित कलाओं का प्रसंग आने पर कभी-कमार प्लेटो व्यक्तित्व निर्माण के लिए संगीत की आवश्यकता स्वीकार करते हैं। किंतु इस तरह के विचार उनके चिंतन का केंद्रीय मुद्दा नहीं है। कला के संदर्भ में 'माइमेसिस' (Mimesis) (अनुकरण) शब्द का प्रयोग उन्होंने परंपरा सिद्ध मानकर प्रश्न को यह रूप दिया कि अनुकरण का विषय क्या है और कला के लिए अनुकरणीय क्या है। प्लेटो ने 'अनुकरण' शब्द का प्रयोग दो संदर्भों में किया - (1) विचार जगत और गोचर जगत के बीच संबंध की व्याख्या के लिए; और (2) वास्तविक जगत और कला जगत के बीच संबंध निरूपण के लिए। विद्वान मानते हैं कि पहले का संबंध **तत्व-मीमांसा** से है एवं दूसरे का संबंध नैतिकता से संबंधित प्रश्नों से। कला का प्रश्न नैतिक परिधि में आता है। कला चिंतन के इतिहास में प्लेटो को नैतिकतावादी मानने के मूल में यही धारणा सक्रिय रही है।

10.5 काव्य सत्य और अनुकरण

प्लेटो के लिए काव्य के संदर्भ में सत्य का प्रश्न ही अनावश्यक है। काव्य में सत्य का अनुकरण नहीं किया जाता। उदाहरण के तौर पर, बच्चों को सुनाई जाने वाली कहानियाँ प्रायः कल्पित और असत्य होती हैं। मूल चुनाव यहाँ सत्य-असत्य का नहीं है, अच्छे झूठ और बुरे झूठ के बीच का है। इस प्रकार, प्लेटो की बहस अनुकरण से नहीं, अनुकरण के विषय से रही है। भारत में भी अनेक पुराण कथाएँ ऐसी हैं जिनको लेकर प्रश्न सत्य-असत्य का नहीं है। हम केवल इस तथ्य की ओर आकृष्ट होते हैं कि उसमें कल्पना की सर्जनात्मकता का किस हद तक उपयोग हुआ है। प्लेटो का स्पष्ट मत है कि काव्य में ऐसे विषयों की चर्चा होनी चाहिए जो सद्-मूल्यों पर आधारित हों। विवेकहीन, अपरिपक्व, असंगत, अनैतिक, मन पर दुष्प्रभाव डालने वाले साहित्य का पूर्णतया निषेध होना चाहिए चाहे वह सत्य ही क्यों न हो। उनका स्पष्ट मत है कि साहित्य नैतिक संस्कारों के निर्माण का साधन होना चाहिए। सोच-समझकर ही प्लेटो ने **अन्यापदेशिक** शैली में लिखी गई कथाओं को भी निषिद्ध माना है। इसके पीछे उनका तर्क यह है कि कच्ची उम्र के बच्चों में कथा के अभिधेय और अन्योपदेशिक अर्थ के बीच अंतर करने की न तो क्षमता होती है और न तमीज़। यदि कवि लोकमंगलकारी विचारों का अनुकर्ता हो यानी ऐसी कविता करे जिससे समाज का हित (लोकमंगल) हो तो प्लेटो उसे अपने आदर्श गणतंत्र में रखने को तैयार दिखाई देते हैं।

इस प्रकार, प्लेटो की बहस अनुकरण से नहीं, अनुकरण के विषय से है। ज़ाहिर है कि प्लेटो ने काव्य का निषेध अनुकरण का अनुकरण होने मात्र होने के कारण नहीं किया बल्कि अनैतिक होने के कारण किया है। यहाँ इस बात को समझ लेना चाहिए कि प्लेटो के मत से मूल सत्य 'प्रत्यय' (idea) है। उस सत्य प्रत्यय का अनुकरण प्रकृति है और उस प्रकृति का अनुकरण कलाकृति अथवा कविता में प्रकट होता है। जो अंतर सत्य और असत्य के बीच है, ज्ञान और धारणा के बीच है वही अस्तित्व और आभास के बीच है। कला का स्वभाव अनुकरणात्मक है अर्थात् असत्यमूलक है। अनुकरण का अनुकरण होने के कारण कविता सत्य से तीन गुना दूर हो जाती है। प्लेटो अपनी बात कुर्सी-मेज़ बनाने वाले एक बढ़ई का उदाहरण देकर स्पष्ट करते हैं। वे कहते हैं कि रचनाकार वस्तु जगत की चीज़ों के इस तरह के अनुकरण से प्रभावित होता है। प्लेटो ने सुकरात और ग्लॉकन के संवाद के द्वारा अपने अभिप्रेत को स्पष्ट किया है -

> **सुकरात - 'क्या तुम अनुकरण को इतनी अच्छी तरह समझते हो कि मुझे इसके बारे में समझा सको? क्योंकि मैं स्वयं भी पूर्णतः नहीं समझता कि वह है क्या?'**
>
> **ग्लॉकन - 'संभव है मुझे अनुकरण के स्वरूप का पता हो।'**
>
> **सुकरात - 'इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि तुम्हें इसका स्वरूप पता हो, क्योंकि बहुधा ऐसा भी होता है कि धुँधले ज्ञान वाले लोग अपने कथ्य का पूर्ण ज्ञानी लोगों से भी अधिक स्पष्ट कर देते हैं।'**

ग्लॉकन - 'यह तो है ही। परंतु तुम्हारी उपस्थिति में मुझमें इतना साहस नहीं होता कि मैं बबोल सकूँ कि मैं क्या सोचता हूँ। अतः पहले तुम अपना मत दो।'

सुकरात - 'हम अपना विवेचन सामान्य पद्धति से ही आरंभ करते हैं। हम उन समस्त वस्तुओं को एक ही श्रेणी में रखने के आदी हैं जिनके लिए हम एक ही नाम देते हैं।'

ग्लॉकन - 'अब हमें वस्तुओं की कोई भी श्रेणी बना लेनी चाहिए जैसी तुम चाहो। उदाहरणार्थ, यदि काम चले तो पलंग और मेज़ को ही ले लो।

सुकरात - 'परंतु इन वस्तुओं की दो आकृतियाँ हैं, एक पलंग की और एक मेज़ की।'

ग्लॉकन - 'तब ठीक है, क्या हम यह नहीं कहते कि प्रत्येक वस्तु का निर्माता आकृति को देखकर ही अपने मस्तिष्क में विचार लाता है। पलंग और मेज़ का हम उपयोग करते हैं जैसे कि अन्य वस्तुओं को उपयोग करते हैं क्योंकि कोई भी निर्माता वास्तविक आकृति निर्माण नहीं कर सकता - और करे भी कैसे।'

सुकरात - ' यह सोचो तुम उस निर्माता को किस नाम से पुकारोगे। मेरा मतलब उस व्यक्ति से है जो सम्पूर्ण वस्तुओं को बनाता है और सभी हस्तकलाओं का वही उद्गम स्रोत है।'

ग्लॉकन - 'तुम तो किसी अद्भुत प्रतिभाशाली एवं कुशल व्यक्ति की बात कर रहे हो।'

'तनिक ठहरो', सुकरात ने उत्तर दिया, 'तुम्हारे पास इस बात को कहने के लिए और भी पुष्ट कारण होगा। यह शिल्पी इसी प्रकार की अनेक वस्तुएँ ही नहीं बनाता अपितु वह पृथ्वी पर उत्पन्न होने वाली प्रत्येक वस्तु का निर्माता है, संपूर्ण प्राणि-जगत को उत्पन्न करता है और हम सभी को भी - इतने से संतुष्ट न होकर स्वर्गलोक तथा मृत्युलोक की सृष्टि करता है तथा स्वर्ग एवं पृथ्वी के नीचे नरक की अन्य वस्तुओं की भी.....।'

ग्लॉकन - 'तुम तो किसी अद्भुत तथा चतुर के विषय में कह रहे हो?'

सुकरात ने जवाब दिया - 'क्या तुम विश्वास नहीं करते। मुझे बताओ तुम्हारे विचार से ऐसा कोई स्रष्टा नहीं है या तुम्हारा यह विचार है कि मनुष्य एक प्रकार से इन समस्त वस्तुओं का निर्माता हो सकता है और दूसरे प्रकार से नहीं। क्या तुम्हें यह नहीं लगता कि पद्धति-विशेष से तुम भी ये सब वस्तुएँ बना सकते हो।'*

प्लेटो ने स्पष्ट कहा कि अनुकर्ता कवि या चित्रकार यथार्थ वस्तुओं का चित्रण नहीं करते, प्रतीयमान वस्तुओं का चित्रण करते हैं क्योंकि मूल में यथार्थ वस्तु महान् शिल्पी (परमात्मा) की बनाई हुई है कवि तथा चित्रकार दोनों ही उसका अनुकरण या नकल करते हैं। उदाहरण के लिए - बढ़ई जिस पलंग या कुर्सी को बनाकर तैयार करता है वह विराट स्रष्टा (ईश्वर) के मस्तिष्क में बने रूप की छाया मात्र है। फिर भी बढ़ई सत्य के काफी निकट पहुँचा है, लेकिन चित्रकार जो उस पलंग का चित्र बनाता है वह तो यथार्थ से 'दोगुना-तिगुना' दूर चला गया है। सत्य से तिगुनी दूर चले जाने की चर्चा उन्होंने इस प्रकार से की -

सुकरात - 'यह कठिन नहीं है, तुम बिना विलम्ब के प्रत्येक स्थान पर वस्तुओं को बना सकते थे। इसका सबसे आसान तरीका यह है कि दर्पण को लेकर चतुर्दिक घुमाओ। इस पद्धति से तुम फ़ौरन ही सूर्य, नक्षत्र, पृथ्वी, स्वयं तथा अन्य जीवधारियों को, लता-द्रुमों तथा उन सभी वस्तुओं को बना सकते हो, जिनकी चर्चा हुई है।'

ग्लॉकन - 'ठीक है। परंतु यह संपूर्ण प्रकृति प्रतीयमान होगी, वास्तविक नहीं।'

सुकरात - 'तुमने बहुत ठीक बात कह दी है, जो मेरी धारणा थी वही तुमने कहा, 'मैं सोचता हूँ चित्रकार भी इसी प्रकार का निर्माता है।'

ग्लॉकन - 'तुम यह भी कह सकते हो या कहोगे कि वह जो कुछ बनाता है वह वास्तविक नहीं होता। जब कि एक प्रकार से चित्रकार भी पलंग की सृष्टि करता है, करता है या नहीं? जब वह चित्र (पलंग) बनाता है।'*

अर्थात् बढ़ई जो बनाता है वह वास्तविक (सत्य पलंग) का निर्माण नहीं करता है, वह जो बनाता है वह 'वास्तविक का अनुकरण' मात्र है। अतः मूल पलंग का निर्माता है ईश्वर, दूसरा उसी का निर्माण करता है बढ़ई, तीसरा उसी पलंग का चित्र आँकता है, चित्रकार। ईश्वर द्वारा पलंग की रचना वास्तविक है,

* Republic X, 'Literary Criticism – Plato To Dryden', Allan H. Gilbert से साभार

शेष दोनों ही उसके अनुकर्ता हैं। इसलिए बढ़ई सत्य से दूना दूर और चित्रकार सत्य के तीन गुना दूर हो जाता है। जो बात चित्रकार पर लागू होती है, वही कवि पर भी। क्योंकि दोनों ही एक ही कोटि के प्राणी हैं। जिस प्रकार चित्रकार सत्य से तीन गुना दूर ठहरता है। दूसरे शब्दों में यही बात इस प्रकार से कही जा सकती है कि काव्य 'मूल प्रकृति' का अनुकरण है एवं 'प्रकृति' सत्य का अनुकरण करती है। अनुकरण का अनुकरण (Imitation of Imitation) होने के कारण कला वास्तविकता से तीन गुना दूर (Thrice Removed from reality) होती है। अतः कवि का अनुकरण झूठा होने के कारण वह पूर्ण आदर का अधिकारी नहीं है।

वास्तविकता और उसका आभास (Appearance and Reality)

प्लेटो ने 'अनुकरण' के संबंध में एक अत्यंत महत्वपूर्ण जिज्ञासा को प्रकट किया है कि कवि या कलाकार वस्तुओं का बिल्कुल वैसा ही अनुकरण करता है जैसी वे हैं अथवा उसका अनुकरण मात्र तथ्य और कल्पना पर आधारित होता है। उन्होंने पलंग वाला उदाहरण फिर दोहराया और कहा कि यदि हम उस पलंग को एक किनारे के सामने से अथवा अन्य किसी सिरे से देखने की कोशिश करते हैं तो वह अलग-अलग ढंग से दिखाई देता है।

दिखाई देने वाला यह अंतर वास्तविक है अथवा आभास-मात्र है? क्या यह वैसा ही अनुकरण है जैसा कि मूल पलंग (Does it imitate the thing as it actually is?) या यह वैसा दिखाई देता है जैसा उसे रचना में ढाला जाता है? क्या वह केवल कल्पनात्मक अनुकरण है अथवा सत्य का अनुकरण है? इस बात का जब हम निर्णय करते हैं तब यही स्पष्ट होता है कि कवि या कलाकार 'प्रकृति निर्माता' के पलंग का यथा-तथ्य (Actual) अनुकरण नहीं कर सका है उसकी असफलता ने उसे अनुकरण के द्वारा सत्य से बहुत दूर कर दिया है। (The imitation is far removed from truth) वह ऐसी कल्पना मिला देता है जिसपर पहले तो विश्वास ही नहीं हो सकता और यदि विश्वास हो भी जाए तो यह धोखे का विश्वास (Illusion) है। धोखे का यह विश्वास विवेकहीन व्यक्ति को ही हो सकता है। अतः कवि या कलाकार अपनी तरह के मूर्ख व्यक्तियों को ही मूर्ख बना सकते हैं। चूँकि सच्चे सत्य की अभिव्यक्ति उन्हें नहीं आती। इसलिए उसका अनुकर्ता भी अज्ञान में जीता है। लेकिन विवेक-युक्त प्राणी को तो इस अज्ञानपूर्ण अनुकरण की भर्त्सना करनी चाहिए क्योंकि यह त्याज्य है।

प्लेटो ने अपनी बात के पुष्टीकरण के लिए त्रासद-कवियों में अग्रणीय होमर का नाम लिया। उन्होंने यह घोषणा की कि दुनिया-भर के त्रासद कवियों को होमर ने ही झूठ सिखाया। त्रासदी का कवि होमर यह जानता है कि वह कैसे लिखी जाती है और इसका दिव्य-ज्ञान उसे है। साथ ही, वह त्रासदी का उचित निर्वाह भी कर सकता है और म्यूज (Muse) के वश में रहता हुआ भी वह, वह कह देता है जो उसे कहना चाहिए। त्रासदी पढ़ते हुए भी हम यह कैसे भूल सकते हैं कि यह एक अनुकरण है और यह अनुकर्ता कवि अंतिम वास्तविकता (Ultimate reality) को व्यक्त करने में असमर्थ रहता है -

> **मेरे प्यारे होमर, अगर तुम्हारा गुणात्मक ज्ञान सत्य से दूर नहीं है और तुम हमारी अनुकरण की परिभाषा के अनुसार केवल कल्पनाजीवी नहीं हो और अगर तुम सत्य से सच्चे अर्थों में संबंधित हो साथ ही तुम मनुष्य की ज़िन्दगी की अच्छी-बुरी बनाने वाली वस्तुएँ भी जानते हो तो भी क्या तुम हमें बता सकते हो कि तुमने किस शहर अथवा किस सरकार का कितना सुधार किया है। होमर के सेनापतियों ने या सलाहकारों ने अपने समय में ऐसा कौन-सा युद्ध लड़ा है, जिसने देश का उद्धार किया हो।**

यह बात कैसे मानी जाए कि होमर ने मनुष्य को एक नई जीवन-दृष्टि दी है। जबकि उसकी कृतियों के देखने से यह लगता है कि उसने मनुष्य को छला है। जिस व्यक्ति ने अनुकरण को अपनाया है वह केवल छाया-कृति को ही पकड़ सका है। अतः प्लेटो ने होमरीय जीवन के आदर्शों का भरसक खण्डन किया है -

> **परंतु सोचो ग्लॉकन यदि होमर सचमुच लोगों को शिक्षित करके उन्हें श्रेष्ठ बनाने में सफल रहा होता, यदि उसे केवल अनुकरण के क्षेत्र में ही सफलता मिली होती तो उसने कई शिष्य नहीं बनाए होते और वह उनके सम्मान और प्रेम का पात्र न होता?.....यदि होमर लोगों को उत्कृष्ट बनाने में कुछ सहायता कर सका होता तो क्या उस समय का समाज उसे और हेसियाद को गीत गाते हुए यहाँ-वहाँ भटकने के लिए छोड़ देता? लोग उसे सोने से भी अधिक मूल्यवान समझकर उसे अपने साथ रखते? और यदि उसमें वे सफल होते तो लोग अपनी शिक्षा का भार सौंपकर उसके पीछे-पीछे भागते दिखाई देते।**

10.6 प्रत्ययवाद से तात्पर्य

प्लेटो में काव्य और दर्शन के सापेक्ष महत्व को लेकर प्रायः अंतर्द्वंद्व दिखाई देता है। इसका कारण है वे स्वभाव और संस्कार से कवि हैं तथा शिक्षा और परिस्थिति से दार्शनिक। कभी वे काव्य और दर्शन के पुराने कलह की याद दिलाते हैं तो कभी काव्य को ईश्वरीय प्रेरणा से उद्भूत मानकर उसकी प्रशंसा करते हैं। प्रायः प्लेटो का स्मरण काव्य के विरुद्ध अनेक अभियोग लगाने वाले दार्शनिक आचार्य की तरह किया जाता है। उनके मत से काव्य की अग्राह्यता के दो आधार हैं - दर्शन और प्रयोजन। मूलतः प्लेटो प्रत्ययवादी (Idealist) दार्शनिक हैं। प्रत्ययवाद के अनुसार प्रत्यय अर्थात् विचार ही परम सत्य है, वह नित्य है, एक है, अखंड है और ईश्वर ही उसका स्रष्टा है। यह दृश्यमान वस्तु-जगत प्रत्यय (परम सत्य या ईश्वर) का अनुकरण है क्योंकि कलाकार किसी वस्तु को ही अपनी कला के द्वारा निर्मित अंकित या चित्रित करता है। इस क्रम में कला तीसरे स्थान पर है - पहला स्थान प्रत्यय का (अर्थात् ईश्वर का), दूसरा स्थान उसके आभास या प्रतिबिंब या वस्तु-जगत का और तीसरा स्थान वस्तु-जगत के प्रतिबिंब कला-जगत का। इसलिए परम सत्य से कला का तिहरा अलगाव है और अनुकरण का अनुकरण होने के कारण वह मिथ्या या झूठ है। प्लेटो के शब्दों में कविता या कला सत्य से तिगुना दूर (Thrice removed from reality) होती है।

अपने इस सिद्धांत कथन को प्लेटो अपने उदाहरण द्वारा स्पष्ट करते हैं। उनका कहना है कि संसार में प्रत्येक वस्तु का एक नित्य रूप होता है। यह प्रत्यय या विचार में ही निहित रहता है और यह रूप ईश्वर निर्मित है। विचार (प्रत्यय) में मौजूद उसी रूप के आधार पर किसी वस्तु का निर्माण होता है। प्लेटो के द्वारा दिया गया पलंग का उदाहरण लें। यथार्थ पलंग वह है जिसका रूप हमारे प्रत्यय या विचार में है और इस रूप का निर्माण ईश्वर ने किया है। इस विचार में विद्यमान रूप के आधार पर बढ़ई लकड़ी के पलंग का निर्माण करता है और उसके द्वारा निर्मित पलंग का चित्र कवि या कलाकार निर्मित करता है। इस प्रकार तीन पलंग हुए - (1) एक तो वह जिसका निर्माण ईश्वर करता है (प्रत्यय या विचार रूप में पलंग), (2) दूसरा वह जिसका निर्माण लकड़ी से बढ़ई करता है; और (3) तीसरा वह जिसका निर्माण कलाकार या चित्रकार करता है। इन तीनों के पलंग में अंतर है।

मूल बात यह कि वस्तु प्रत्यय में ही रूपायित होती है, फिर उसके अनुकरण कर निर्माता उसे ठोस आकार देता है। यह आकार यथार्थ की नकल होता है। इसलिए उसकी स्थिति यथार्थ के दूसरे स्थान पर है। कलाकार - कवि, चित्रकार, मूर्तिकार - किसी माध्यम (शब्द, रंग या पत्थर) के द्वारा उस ठोस वस्तु की नकल कर उसे नया रूप देता है। इसलिए वह यथार्थ से तीसरे स्थान पर है। इसीलिए प्लेटो कहते हैं कि कला नकल की नकल है, अनुकरण का अनुकरण है, छाया की छाया है, प्रतिबिंब का प्रतिबिंब है अर्थात् नकल या मिथ्या है। प्लेटो अपना यह तर्क सभी कलाओं पर लागू करते हैं। प्लेटो का विचार है कि होमर और हैसिओड (आठवीं शताब्दी ई.पूर्व) जैसे कवियों के काव्य अथवा सोफोक्लीज़ अरिस्तोफोनीज़ जैसे नाटककारों के नाटक भी अपवाद नहीं हैं। इन कृतियों को पढ़ने, देखने या सुनने से अच्छे नागरिकों का निर्माण आदर्श राज्य के लिए संभव नहीं है। नैतिकतावादी आग्रहों से प्रेरित होकर प्लेटो काव्य और कलाओं की निंदा करते हैं। उनके कुछ तर्क इस प्रकार हैं -

1. होमर के महाकाव्यों - 'इलियड' और 'ओडसी' - में देवताओं का चरित्र असत्य भी है और अनुचित भी। उनमें देवत्व कहाँ है और देवत्व नहीं है तो वे मनुष्यों के उन्नयन में सहायक नहीं हो सकते।

2. होमर और हैसिओड के काव्य में ऐसे स्थल प्रायः आते हैं जो पाठक को वीर और साहसी के बदले दुर्बल और कायर बनाते हैं। काव्य तो ऐसा होना चाहिए जो नवयुवकों में शौर्य की भावना भरे, उनके चरित्र का निर्माण करे और मृत्यु की लालसा के लिए उन्हें तैयार करे। प्लेटो का प्रसिद्ध कथन है - 'दासता मृत्यु से भी बुरी चीज़ है।'

3. प्रायः कवि भोग और विलास की कामना से भर कर आवेशपूर्ण, कामुकतापूर्ण भावों की सृष्टि करते हैं। इनसे शुद्धता और संयम में बाधा पड़ती है तथा चरित्रहीनता, भोग-लिप्सा और अराजकता फैलती है।

4. होमर के काव्य में ऐसी कहानियाँ भरी पड़ी हैं जिनमें दुष्ट जन सुख भोगते हैं और सज्जन दुख से व्याकुल रहते हैं। जहाँ सदाचार के लिए दंड और दुराचार के लिए सुख-वैभव और

पुरस्कार मिलेगा वहाँ नैतिकता कैसे टिक सकेगी। कोमल बुद्धि वाले बालकों पर इन कहानियों का प्रभाव अनिष्टकारी होता है।

5. नाटककार प्रायः हल्के, ओछे, टुच्चे, हँसोड़, मसखरे, कामुक भावों का चित्रण पसंद करते हैं और प्रेक्षकों का एक वर्ग रंगशाला में ऐसे अभिनयों की दाद भी देता है। होता यह है कि नाटककार उदात्त भावों से सर्वथा दूर रहते हैं। इससे समाज में ओछे भावों का वर्चस्व बढ़ जाता है।

6. काव्य या नाटक की अंतःप्रेरणा भावोच्छलन या भावों के तीव्र आवेग से उत्पन्न होती है, तर्क से नहीं और तर्क न होने के कारण भावावेश हृदय से चालित होता है बुद्धि से नहीं। बुद्धि और हृदय में संतुलन का अभाव आ जाने से कला उदात्त की सृष्टि नहीं कर पाती। फिर भावमूलक होने से कला भाव को ही उद्दीप्त कर पाती है, तर्क को नहीं। तब होता यही है - काव्य मनोवेगों का पोषण और सिंचन करता है (Poetry feeds and waters the emotions)। इसी का दुष्परिणाम यह होता है कि काव्य सत्य और शिव से दूर हो जाता है।

7. काव्य में प्रायः अन्योक्ति (Allegory) की रचना होती है। बालकों में इतनी बुद्धि नहीं होती कि वे अन्योक्ति तथा यथार्थ में भेद कर सकें। इसलिए बच्चों के सामने शुद्ध और नैतिक विचारों की ही कहानियाँ आनी चाहिए, असत्य और अनैतिक कल्पनाओं से प्रेरित नहीं।

इस प्रकार प्लेटो का काव्य-नाटक विषयक विरोध साहित्येतर और नैतिक प्रतिमानों से प्रेरित है। उनके विचार से काव्य-सृजन एक प्रकार का ईश्वरीय उन्माद है, कवि उन्मत्त व्यक्ति है और काव्य-देवी द्वारा अंतःप्रेरित होकर रचना करता है। प्लेटो बार-बार इस बात की ओर संकेत करते हैं कि साहित्य में मनुष्य के नैतिक पक्ष को सम्पन्न, समृद्ध और संतुष्ट करने की शक्ति होनी चाहिए। इस दृष्टि से वे नैतिकतावादी ही नहीं उपयोगितावादी भी हैं। उनकी दृष्टि में सुंदर वही है जो सत्य और शिव से सम्पन्न है।

प्लेटो ने काव्य प्रकृति और काव्य सृजन प्रक्रिया के साथ काव्य प्रभाव पर भी गहराई से विचार किया है। 'रिपब्लिक' के दसवें अध्याय में एक ओर तो वे कविता को सत्य का निम्नतर स्तर का चित्र या वर्णन मानते हैं, वहीं दूसरी ओर वे कविता को आत्मा के अधम भाग से सम्बद्ध कर देते हैं। उनके विचार से मानव आत्मा की प्रकृति दोहरी होती है - प्रथम, उत्तम भाग में बुद्धि और विवेक तथा दूसरे अधम भाग में शोक, क्रोध आदि मनोविकार। इसलिए काव्य का प्रभाव आत्मा के निम्न स्तर से संबंधित होता है। प्लेटो के शब्दों में - अनुकरण धर्मी कवि का उद्देश्य लोकप्रियता प्राप्त करना होता है। किंतु लोकप्रिय होने के लिए वह आत्मा के बौद्धिक पक्ष को संचालित और प्रभावित करके अपने पाठकों को प्रसन्न नहीं करता बल्कि वह सहज उत्तेजनशील संवेगों को संचालित करने में रुचि लेता है। इस प्रकार कवि प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा में दुष्ट प्रकृति का बीजारोपण करता है। दार्शनिक प्लेटो को कविता के विरुद्ध केवल यही शिकायत नहीं थी कि वह आत्मा के असाधु अंश का पोषण करती है बल्कि कविता को लेकर उनकी सबसे बड़ी शिकायत यह थी कि कविता हमारी वासनाओं को उत्तेजित करती है, उन्हें भड़काती और है, मनुष्य को अनियंत्रित बनाती है और आचरण-भ्रष्ट प्राणी का रूप देती है। जबकि अच्छी कविता का काम हमारी वासनाओं को सुखाना और संयमित करना होना चाहिए। चूँकि काव्य एक ऐसी शक्ति से सम्पन्न होता है जो भली प्रकृति के व्यक्ति के लिए घातक होती है, अतः प्लेटो कविता को आग्राह्य मानते हैं। किसी कवि की सफलता का रहस्य यह होता है कि वह हमारी भावनाओं को जाग्रत करने में किस हद तक सफल हुआ है। विचार करने पर हम पाते हैं कि वास्तविकता इसके ठीक विपरीत है क्योंकि जीवन में जब हम शोकाकुल होते हैं तो हमें भावावेग और भावोद्वेलन के क्षणों को संयत करने में मानवीय गौरव की अनुभूति होती है। हम धैर्य से उसका सामना करते हैं और इसी आचरण की लोक में सराहना होती है। गलदश्रु भावुकता का लोक में आदर नहीं होता है। प्लेटो ने कहा आम तौर पर सामाजिक मर्यादा की रक्षा के लिए हम जिन भावों को अभिव्यक्त नहीं करते वे भाव अभिव्यक्ति का अवसर खोजते रहते हैं। भावावेग के क्षणों में कविता उन्हें यह अवसर प्रदान करती है और हमारे पूरे आत्म-संयम को शिथिल कर देती है। ध्यान देने की बात है कि प्लेटो की यह धारणा केवल दुःखमूलक काव्य-कृतियों या त्रासदी को ही लेकर नहीं थी बल्कि कामदी आदि हास्य व्यंग्यमूलक विधाओं के संबंध में भी समान महत्व रखती है। परिहास का दमन हम मानव जीवन में इसलिए करते हैं कि कहीं हमें सस्ता भावुक मसखरा न समझ लिया जाए। चाहे त्रासदी हो या कामदी प्लेटो का आदर्श अच्छे मनुष्य का निर्माण करना है। एक ऐसे मनुष्य का निर्माण जो सुख-दुःखमूलक सभी प्रकार के संवेगों के दमन पर निर्भर है। चूँकि कविता इस दमन में बाधक है, इसलिए प्लेटो कहते हैं - 'यह अनुकरण इन मनोवेगों को फैलाता, सींचता और पुष्ट करता है, जबकि हमको उन्हें सुखा

देना चाहिए। यह उनको हमारा शासक बनाकर स्थापित करता है, जबकि उनको तो शासित होना चाहिए।' कितनी विचित्र बात है कि प्लेटो कविता का विरोध करते हुए भी कविता को अपने पक्ष समर्थन के लिए पूरा अवसर प्रदान करना चाहते थे। उन्होंने कहा - **'प्रिय ग्लॉकन! सचमुच इस द्वंद्व में बड़ी भारी बाजी लगी हुई है। इतनी बड़ी बाजी जितनी कि लोग समझते नहीं है क्योंकि इस द्वंद्व पर मनुष्य का भला या बुरा होना निर्भर है। अतएव क्या समाज, क्या धन क्या पद और क्या कविता प्रलोभन किसी को भी हमें न्यायपराणता और सद्गुणों के प्रति असंयत एवं असावधान होने के लिए उत्तेजित नहीं करना चाहिए।'**

विद्वानों का यह मत है कि प्लेटो का यह विचार रोमांटिक काव्य सिद्धांतों के विरोध में आज भी खड़े हैं। प्लेटो त्रासदी के मूल में मौजूद करुणा और त्रास के दोहरे मनोवेग और उसके सुखात्मक प्रभाव के अहसास से परिचित यह बात उनके संवादों में विशेषकर 'फिलेबस' (Philebus) में विस्तार से मिलती है।

प्लेटो के चिंतन में कवि और दार्शनिक का न केवल द्वंद्व है बल्कि उनके व्यक्तित्व के दोनों पक्षों में आश्चर्यजनक द्वंद्वात्मक एकता के दर्शन होते हैं। वस्तुतः कविता दर्शन को चुनौती देती है और दार्शनिक प्लेटो दर्शन से तुलना करते हुए ही कविता की आलोचना करते हैं। सच बात यह है कि दर्शन की ओर से कविता को चुनौती देकर प्लेटो ने उसके ऊपर एक गहन दायित्व सौंपने का कार्य किया है।

10.7 समाहार

आज भी विद्वान प्लेटो द्वारा कविता पर लगाए गए आक्षेपों से जूझ रहे हैं और उनका सही समाधान उन्हें नहीं मिल पा रहा है। समय-समय पर प्लेटो के संवादों में परवर्ती काव्यशास्त्र में विकसित अनेक सिद्धांतों के बीज भी खोजने के प्रयत्न किए गए हैं। इस तरह के प्रयत्न करने वाले विद्वानों ने करुणा और त्रास की दोहरी मिश्रित स्थिति या विरेचन सिद्धांत, विरुद्धों के सामंजस्य का सिद्धांत आदि के बीज संकेत प्लेटो में पाए हैं जबकि सच बात यह है कि प्लेटो के चिंतन का महत्व काव्य सिद्धांतों की सूची बनाने में नहीं है बल्कि इस बात में है कि प्लेटो कविता को लेकर बुनियादी प्रश्न उपस्थित करते हैं। प्लेटो जैसे चिंतक इसलिए मूल्यवान हैं कि वह कविता पर सजग तार्किकता के साथ विचार करते हैं। प्लेटो के चिंतन का परवर्ती काव्य चिंतन पर अनेक जगह प्रत्यक्ष और प्रच्छन्न प्रभाव दिखाई देता है। अनेक आक्षेपों और वाद-विवादों के केंद्र में रहते हुए भी प्लेटो का नाम पश्चिमी आलोचना जगत में आज भी उल्लेखनीय है। इसका प्रधान कारण यह है कि अरस्तू के काव्य सिद्धांत प्लेटो द्वारा कविता पर किए गए आक्षेपों का समाधान या उत्तर देने की मनःस्थिति से उपजे हैं। प्लेटो के बिना अरस्तू के चिंतन की कल्पना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। प्लेटो ने कवियों का गौरव यह कहकर छीन लिया है कि कवि नकलची होता है। कवि के इस छिने हुए गौरव को प्लेटो के शिष्य अरस्तू पश्चिमी काव्यशास्त्र में पुनः स्थापित किया है। बीसवीं सदी के महत्वपूर्ण चिंतन-आलोचक टी.एस.एलियट रोमांटिक साहित्य सिद्धांतों के विरोध में खड़े हुए। कारण, रोमांटिक कविता में भावातिरेक और कल्पनातिरेक से उत्पन्न असंतुलन उन्हें अमान्य है। स्वयं एलियट ने कवि की व्याख्या सर्जक के रूप में नहीं माध्यम के रूप में की है। संक्षेप में पश्चिम के कविता संबंधी चिंतन के वाद-विवाद के मूल में प्लेटो कहीं न कहीं अवश्य रहे हैं।

10.8 शब्दावली

तत्वमीमांसा - ब्रह्म, आत्मा, सृष्टि आदि के यथार्थ ज्ञान आदि का तर्कसंगत विवेचन।
अन्यापदेशिक शैली - अन्योक्ति शैली
प्रतीयमान - ध्वनि या व्यंग्य द्वारा जाना जाता हुआ
गलदश्रुभावुकता - अतिशय भावुकता
भावातिरेक - भावों की अति अधिकता

10.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

निर्मला जैन, **प्लेटो के काव्य सिद्धांत**, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

निर्मला जैन, कुसुम बाँठिया, **पाश्चात्य साहित्य चिंतन, वाणी प्रकाशन**, दिल्ली।

देवेन्द्रनाथ शर्मा, **पाश्चात्य काव्यशास्त्र**, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

राम अवध द्विवेदी, **साहित्य सिद्धांत**, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना।

डॉ. नगेन्द्र और डॉ. सावित्री सिन्हा (संपा.) **पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परंपरा**, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

भोलानाथ शर्मा, **आदर्श नगर व्यवस्था**,(रिपब्लिक का मूल ग्रीक से अनुवाद), हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग।

David Daiches, **Critical Approaches to English Literature,** Longmans, London, 1956.

William K. Wimsatt and Cleanth Brooks, **Literary Criticism : A Short History**, Alfred A. Knopf, New York, 1957.

10.10 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. प्लेटो के काव्य प्रेरणा सिद्धांत पर प्रकाश डालिए।
2. प्लेटो द्वारा कविता पर लगाए गए आक्षेपों पर विचार कीजिए।
3. काव्य सत्य और अनुकरण के संबंध में प्लेटो के मत पर प्रकाश डालिए।
4. प्लेटो का अनुकरण से क्या तात्पर्य है? उनके मूल मंतव्य को स्पष्ट कीजिए।
5. प्लेटो के काव्य सिद्धांतों की सार्थकता/प्रासंगिकता पर विचार कीजिए।